जिज्ञासा

ISSN 2349-560X

अंक 33

वर्ष 2019
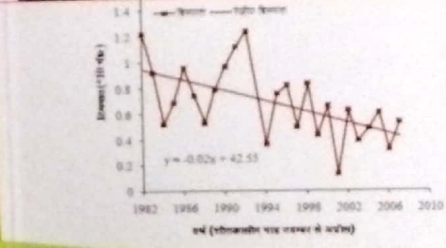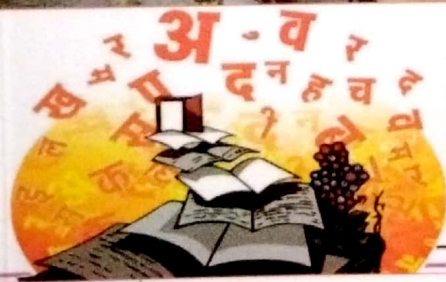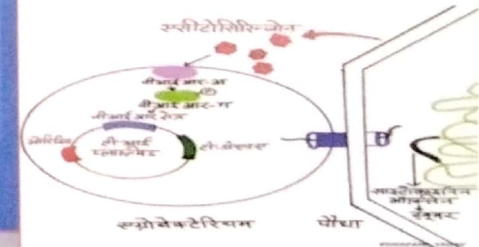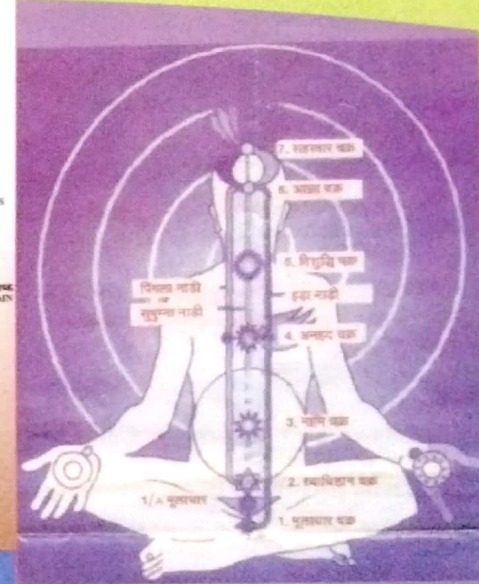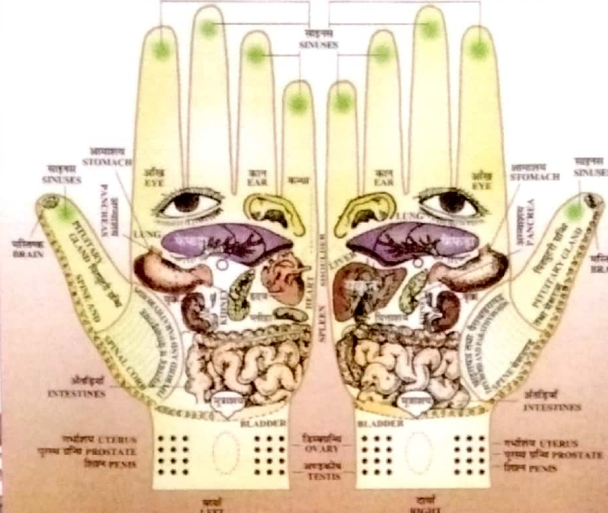
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

ISSN 2349-560X

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

ISSN 2349-560X

जिज्ञासा

2019

विज्ञान पत्रिका

अंक 33

क्र. सं.	लेख का शीर्षक	पृष्ठ सं.

विज्ञान एवं तकनीकी खण्ड

प्रबंध विज्ञान खण्ड

क्र. सं.	लेख का शीर्षक	पृष्ठ सं.

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति खण्ड

अन्य खण्ड

ऐतिहासिक घटनाक्रमों का प्रत्यक्षीकरण (नाट्य ग्रंथों एवं नृत्य विधा के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. चैन सिंह नागवंशी
व्याख्याता
एवं
आराधना चतुर्वेदी
शोधार्थी
प्रा.भा.इति.,सं. एवं पुरातत्व विभाग
इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)
ई–मेलः aradhana08@yahoo.com

सार

आचार्य भरतमुनि द्वारा विरचित ''नाट्यशास्त्र'' प्राचीन भारत में नाट्य विधाओं को ही प्रस्तुत नहीं करता, अपितु उसके माध्यम से प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं का भी अभिज्ञान होता है। उन्हीं के शास्त्रीय परम्परा पर आधारित प्राचीन मनीषियों ने विभिन्न नाट्य ग्रंथों की रचनाएं की, जिनमें प्रचुर मात्रा में ऐतिहासिक तथ्य विद्यमान हैं। उनसे प्राचीनतम इतिहास के हर पहलू का ज्ञान हो जाता है। भवभूति विरचित ''उत्तर रामचरित'' रामायण के सन्दर्भों के साथ समाज में प्रचलित धारणाओं, परम्पराओं और प्रथाओं को भी बखूबी प्रस्तुत करता है। हर्ष रचित ''रत्नावली'' में वर्धनवंश के समय का समूचा दृश्य उपस्थित हो जाता है। कालिदास कृत 'मालविकाग्निमित्रम्' में शुंगकालीन राजनीतिक परिदृश्य तो उपलब्ध है ही, साथ ही इसमें गुप्तवंशीय परिवेश भी प्राप्त होता है। विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' के माध्यम से विशाल नंद साम्राज्य के विवरण के साथ ही उसके खिलाफ किये जाने वाले कूटनीतिक षड़यंत्रो का यथावत् चित्रण है। इसमें चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य के संयोग और उसके दूरगामी परिणाम का भी निदर्शन प्राप्त होता है। 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' महान कवि और नाटककार भास की महान कृतियों में से एक है, जो तत्कालीन राजनीतिक घटनाक्रमों का रहस्यात्मक विवेचन प्रस्तुत करते हैं। शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम' में प्राचीन राजनीति के स्वरूप जैसा विवेचन है, वैसा तो अन्यत्र दुर्लभ ही है। विशाखदत्त के 'देवीचन्द्रगुप्तम' में भी पूर्वकालीन भारतवर्ष की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अच्छा विवेचन प्राप्त हो जाता है। इसके साथ ही अन्य नाट्यविधा को प्रदर्शित करने वाले ग्रंथ रचे गये जो प्राचीन भारतवर्ष के ऐतिहासिक घटनाक्रमों को चलचित्र की भांति प्रस्तुत कर देते है।

इसी प्रकार ही भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित नृत्य विधाएँ भी तत्कालीन ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्थितियों का निरूपण करती है। गुजरात के गरबा नृत्य, कर्नाटक के यक्षगान नृत्य, मध्य प्रदेश का करमा नृत्य, छत्तीसगढ़ का पंथीनृत्य और आन्ध्र प्रदेश का बंजारा नृत्य शैली आदि में गायन परम्परा भी है, जिसमें पूर्वकालीन भारतवर्ष की राजनीतिक, सांस्कृतिक और परम्पराओं का अच्छा प्रस्तुतिकरण प्राप्त होता है। इन गायन प्रधान नृत्यशैलियों से प्राप्त भावों से मानवमन एक क्षण के लिए स्वयं को भी भूल जाता है। ये नृत्य शैलियाँ, मानवीय व्यथा, तड़प, षड़यंत्र, कष्ट, सुख, प्रेम आदि का भी स्पष्ट रूप से प्रस्तुतिकरण कर देता है।

निष्कर्ष यह है कि प्राचीन नाट्यग्रंथ और नाट्यविधाएं प्राचीन भारतवर्ष के समस्त ऐतिहासिक घटनाक्रमों का क्रमबद्ध रूप से तत्कालीन स्वरूप को मानवमन में साकार कर देता है।

की–वर्डः ऐतिहासिक घटनाक्रमों के दर्पण, नाट्यग्रंथ एवं नृत्यविधाएं।

परिचय

प्राचीन भारतवर्ष के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्रोत के रूप में हमारे पास कई साधन उपलब्ध

हैं। उनमें प्राचीन साहित्यों की भूमिका अविस्मरणीय है। वेद, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, स्मृतियाँ, महाकाव्य, पुराण आदि की उपस्थिति हमारे गौरवशाली अतीत का रूपायन करने हेतु पर्याप्त है। ऐतिहासिक और समसामयिक ग्रंथों की उपलब्धता से हमारी विरासत अत्यंत समृद्धशाली हो जाती है। इन्ही कृतियों में नाट्य ग्रंथ भी हैं, जो अपनी गरिमामयी उपस्थिति से प्राचीन सन्दर्भों को स्थिरता प्रदान कर हमारा मार्ग प्रशस्त करता है। प्राचीन काल में आचार्य भरतमुनि द्वारा विरचित "नाट्यशास्त्र" एक अभूतपूर्व कृति है, जिसके माध्यम से 'नाट्यकला' का वृहत विकास हुआ। इसके माध्यम से तत्कालीन समाज की राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति की एक झांकी अवश्य ही आंखों के समक्ष उपस्थित हो जाती है। पोशाक, रहन–सहन, बनावट, श्रृंगार, मान्यताएँ, संस्कृति एवं तत्कालीन मानवीय भावनाएँ हमारे समक्ष रूपाकार हो उठती है। प्राचीन काल से ही मनोरंजन एवं हासविलास के प्रमुख साधनों में यह लोगों की मस्तिष्क की एक नवीन उपज थी। जिन्हें चौंसठ कलाओं में प्रमुख स्थान हासिल हो चुका था। अपने बाल्यकाल में श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी आदि ने इसकी विधिवत् शिक्षा ग्रहण की थी। बौद्धग्रंथ सुत्तनिपात के अन्तर्गत "विमानवत्थु" सम्भवतः ऐसा प्रथम ग्रंथ है, जिसमें कथानकों को नाटकीयता से प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ में दिव्य विमान (राजप्रसादों) की कथाएं हैं। प्रत्येक कथानक में कोई न कोई दिव्य पुरूष यह बतलाता है कि उसने अमुक विमान कैसे प्राप्त किया ? इसी प्रकार "पेतवत्थु" नामक ग्रंथ भी नाटकीयता से ओत–प्रोत है। इसमें प्रेतों के माध्यम से कहानियां बनी हैं। प्रत्येक कथानक में कोई न कोई प्रेत यह बताता है कि किन कुकर्मों के फलस्वरूप उनकी यह अधोगति हुई है ? इन ग्रंथो के कथानको में नाटकीयता के प्रदर्शन के साथ ही तत्कालीन भारतवर्ष की धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक दशा पर बेहतरीन प्रकाश पड़ता है। गुप्तकालीन कवि कालिदासजी ने "मालविकाग्निमित्रम" नामक ऐतिहासिक नाटक ग्रंथ की रचना की थी। इसका रचनाकाल चौथी शताब्दी ईस्वी के मध्य स्वीकार किया जाता है। इस ग्रंथ में शुंग शासक पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र एवं मालविका नामधारी एक कन्या के मध्य स्थापित प्रेम प्रसंगों का विवरण दिया गया है। इस ग्रंथ में हालांकि प्रेम प्रसंग को मुख्य विषय के रूप में तरजीह दी है, लेकिन इसमें अन्यान्य प्रसंग भी विवृत है। इसमें पुष्यमित्र से सम्बन्धित विवरण अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। यवन आक्रमणों के उल्लेख से तो इस ग्रंथ की महत्ता स्वयं सिद्ध हो जाती है। सम्पूर्ण ग्रंथ 'नाट्यविधा' में ही विवृत है, लेकिन इसका महत्व प्रत्येक दृष्टिकोण से संजीवनी प्रदायक है।

"मुद्राराक्षस" नामक ग्रंथ की रचना 'विशाखदत्त' नामक मनीषी द्वारा की गई थी। इसका रचनाकाल 600 से 700 ई. के मध्य माना जाता है। इस ग्रंथ में हास परिहास के कई क्षण उपलब्ध हैं, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक स्थिति को प्रतिबिम्ब करने वाला साहित्यिक स्रोत है। इस कृति में मौर्य शासक चन्द्रगुप्त और आचार्य चाणक्य के राजनीतिक सूझ–बूझ का प्रदर्शन प्राप्त होता है। अंतिम नंदशासक घनानंद की विशाल सैनिक शक्ति के मध्य आचार्य चाणक्य के कूटनीतिक दांव–पेंच के प्रदर्शन को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने वाली सम्भवतया यह प्रथम कृति है। नंद शासक और उसके वंश के समूल विनाश के लिए चन्द्रगुप्त और चाणक्य द्वारा किये गये राजनीतिक एवं कूटनीतिक सूझ–बूझ का ऐसा अनोखा ग्रंथ आज भी तत्कालीन युग के जीवन्त स्वरूप का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत कर देता है।

महाकवि भास के द्वारा विरचित नाट्य ग्रंथ "प्रतिमायौगन्धरायण" भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिसमें तत्कालीन भारतवर्ष की राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियों का अच्छा निरूपण किया हुआ है। सातवी शताब्दी ईस्वी में वर्धन वंश के महान शासक हर्षवर्धन स्वयं एक महान नाटककार एवं अभिनेता था। उसने रत्नावली, नागानन्द और प्रियदर्शिका नामक ख्यातिलब्ध नाट्य ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में प्राचीन भारतवर्ष के धार्मिक परिवेश, सामाजिक स्वरूप एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के अच्छे एवं महत्वपूर्ण सन्दर्भ उपलब्ध हैं। सम्राट हर्ष की धार्मिकता, राजनीतिक इच्छा शक्ति, प्रजाजनों से सम्बन्ध एवं रीति रिवाज का सुंदर निदर्शन प्रस्तुत ग्रंथों में दृष्टव्य है। राजकवि शूद्रक कृत "मृच्छकटिक" भी एक महत्वपूर्ण नाट्य

ग्रंथ है, जिसमें तत्कालीन भारतवर्ष की प्रत्येक घटनाएं निरूपित की गई हैं। विशाखदत्त द्वारा रचित "देवीचन्द्रगुप्तम्" नामक नाट्य ग्रंथ भी पूर्वकालीन ऐतिहासिक घटना क्रमों को अपने में समेटे हुए हैं। प्राचीन भारतवर्ष की यह मूल विशेषता ही थी कि उस समय के लेखक अपने पूर्व और समकालीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक घटना क्रमों से पूर्णतया वाकिफ रहते थे और उन्हें ज्यों का त्यों अपनी कृतियों में उड़ेल देते थे।

पूर्व भारतवर्ष की "रचित" नामधारी कृतियाँ भी नाट्य परम्परा पर ही सृजित की गई थी, जिनमें तत्कालीन राजवंश, समाज एवं धर्म का अच्छा विश्लेषण प्राप्त होता है। परिमलगुप्त कृत "नवसाहसांकचरित", विल्हण कृत "विक्रमांकदेवचरित", संध्याकर नंदी कृत 'रामचरित', हेमचंद्र विरचित 'कुमारपालचरित', कालिदास कृत 'रघुवंश, महाकवि बाण कृत 'हर्षचरित', आनंदभट्चित 'बल्लालचरित', चन्द्रप्रभसूरि कृत 'प्रभावकचरित', गंगादेवी कृत 'कम्परामचरित' आदि ग्रंथों में तत्कालीन भारतवर्ष का जीवन्त इतिहास प्रत्यक्ष हो जाता है। 'भद्रबाहुचरित' में जैनाचार्य भद्रबाहु और सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्बन्ध में जो विवरण नाट्य विधा में प्रस्तुत किया गया है, वह अवलोकनीय है।

प्राचीन भारतवर्ष में आमोद–प्रमोद, हास–परिहास एवं राग–रंग का सम्पूर्ण स्वरूप नाट्य विधा में समाहित था। इस विधा के माध्यम से सच्ची एवं प्रेरणास्पद घटनाओं को प्रजाजनों के सम्मुख अभिनीत किया जाता था। जिससे उन्हें अपने जीवन को संवारने एवं उपर्युक्त मार्ग हासिल करने हेतु प्रेरणा प्राप्त हो सके। इसी उद्देश्य से ही दरबारी लेखकों ने बहुसंख्यक नाट्य ग्रंथ सृजित किये। जिनका प्रदर्शन राजकीय छविगृहों में किया जाता था। यह जनसंचार की एक अच्छी विधा थी। जिसके माध्यम से समस्त संदेश आसानी से प्रसारित किये जा सकते थे। मंच संयोजन, निर्देशन, पटकथा लेखन, साज–श्रृंगार, वस्त्राभूषण आदि सभी तत्कालीन परिवेश के अनुसार ही संयोजित किये जाते थे। नाट्य ग्रंथो में उपर्युक्त समस्त जानकारियाँ उपलब्ध हैं। राजपद की गरिमा के अनुकुल प्रदर्शन होता था। देश, काल, परिस्थिति और परम्पराएं सभी एक ही स्थल पर नियोजित हो जाती थी। सामान्यजनों के मनोरंजन के नाम पर उनका ज्ञानार्जन बढ़ाया जाता था। यही समस्त उद्देश्य नाट्य ग्रंथों की रचना में प्रमुख रूप से सहायक सिद्ध हुए।

भवभूति कृत "उत्तररामचरित" में सभी रामायणकालीन पात्रों का चरित्र चित्रण निरूपित है। यह एक उत्कृष्ट नाट्य ग्रंथ है। इस ग्रंथ के अवलोकन से तत्कालीन भारत में प्रचलित यज्ञवाद, बलिप्रथा, अतिथि सत्कार आदि के सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। धर्म, कर्म और वास्तविक जीवन दर्शन का सांगोपांग निरूपण यह ग्रंथ प्रस्तुत करता है। राजनीति, कूटनीति और षड़यंत्र के मिथक भी यहां की घटनाओं में प्रतिबिम्बित हैं। भारतवर्ष का इतिहास पग–पग की घटनाओं से परिभाषित होता था और वे प्रत्येक मिथक से जुड़कर रूपायित होता था। रंगमंच पर अभिनय कर रहे प्रत्येक अभिनेता के मुखारबिंद से जो भी संवाद प्रस्तुत कराया जाता था, वह पूर्ण घटित घटनाओं का पुनःप्रस्थापन था। हालांकि दर्शक भी उन घटनाओं से पूर्व परिचित होते थे, तब भी वे रोमांचित व संवेदनशील हो उठते थे। वही घटनाएं इतिहास को एक दूसरे से जोड़ने का काम करती थी। महाकाव्य, पुराण आदि ग्रंथो की तरह ही नाट्य ग्रंथ भी इतिहास परक कृतियाँ हैं। इनके समुचित परिशीलन से हमें प्राचीन भारतवर्ष के प्रत्येक महत्वपूर्ण घटनाओं को समझने में सहायता प्राप्त होती है। अतैव धर्मग्रंथों की अपेक्षा नाट्य ग्रंथो का महत्व किसी भी प्रकार से कम नहीं है। जो प्राचीन काल से ही इतिहास दर्शक की भूमिका निभाते आ रहे हैं।

इसी प्रकार भारतवर्ष में प्रचलित कुछ प्रमुख ऐसी नृत्य विधाएं हैं, जिनके प्रदर्शन से ऐतिहासिकता का बोध होता है। इससे प्राचीन काल की रहस्यात्मक घटनाएं भी विदित हो जाती हैं। ऐसे ही प्रमुख नृत्य शैलियों का विवरण निम्नानुसार है–

1. बंजारा नृत्य विधा

यह आन्ध्रप्रदेश की प्रमुख नृत्य शैली है। प्राचीनकाल में बंजारा समुदाय मवेशियों के व्यापार हेतु विख्यात थी। सैकड़ो मवेशियों को लेकर इस समुदाय के लोग दूर–दूर की यात्राएं किया करते थे। यह समुदाय आज भी आन्ध्रप्रदेश

में निवासरत है। इनके द्वारा अपने प्राचीनकाल के उक्त कार्यों की स्मृति में विशेष अवसरों पर जो नृत्य किये जाते हैं। उन्हे बंजारा नृत्य शैली के नाम से जाना जाता है। इस नृत्य विधा में केवल स्त्रियां ही भाग लेती हैं, जो अपने सिर पर पीतल के घड़े रखकर द्रुतगति से नृत्य करके दर्शको को आश्चार्यान्वित कर देती हैं। उनके हाथों की कोमल मुद्राएं नृत्य को गतिशीलता प्रदान करती हैं। पुरूष वर्ग द्वारा लोकनृत्यों के वादन का कार्य किया जाता है।

2. यक्षगान नृत्य विधा

यह कर्नाटक प्रदेश की नृत्य विधा है। इसमें दक्षयज्ञ कथा और उसके विध्वंश आदि कथानकों का चित्रण करने वाली यह शैली है। यक्षज्ञान नृत्य शैली में खुले मैदान का चयन किया जाता है। यह लोगो के आमोद–प्रमोद का अतिलोकप्रिय साधन है। इस नृत्य विधा में गायन का भी निर्वाहन किया जाता है। प्रमुख वाद्ययंत्र के रूप में ढ़ोल का प्रयोग किया जाता है।

3 गरबा नृत्य विधा

गुजरात प्रदेश में बहुचर्चित और देश भर में विख्यात यह शैली महिलाओं के गौरव और सम्मान का प्रतीक स्वरूप है। भारतीय इतिहास में जबसे नारी समुदाय को प्रतिष्ठा मिलनी प्रारंभ हुई और जब से उन्हें देवी का स्वरूप माना गया, तब से ही एक नृत्य विधा विकसित हुई, जो सिर्फ महिलाओं द्वारा ही की जाने की परम्परा है। यह नृत्योत्सव आमतौर पर नवरात्रि के अवसरों पर ही किया जाता है। गृहणियाँ नवरात्रि के प्रथम दिन से ही देवी पूजा हेतु नवीन परिधान धारण करती हैं। गृहकार्य से फुरसत होकर सभी महिलाएं निर्धारित स्थल पर एकत्र होती हैं और अपनी नायिका के नेतृत्व में नृत्य में लीन हो जाती हैं। यह नृत्य विधा सम्पूर्ण नवरात्रि के दिनो में प्रत्येक सांध्यकाल में शुरू होकर देर रात तक चलता रहता है। भक्ति भावना से युक्त इस विधा के दर्शक अंत तक भाव विभोर होते रहते हैं।

4. करमा नृत्य विधा

श्रीकृष्णजी द्वारा प्रतिपादित "कर्म करो फल की इच्छा मत करो।" गीता दर्शन पर आधारित यह नृत्य शैली है। करमा गीत प्रधान नृत्य विधा है, जिसमें श्रृंगार, श्रम, कर्म, प्रकृति सौन्दर्य एवं देव आराधना की प्रधानता होती है। यह नृत्य मूलतः आदिवासियों का माना जाता है। इसमें प्रत्येक नर्तक या नर्तकी का हाथ एक दूसरे के हाथ, कंधे या कमर पर आश्रित रहता है। इसका प्रमुख वाद्य मांदर को माना जाता है। यह मध्यप्रदेश की मूल नृत्य विधा है।

5. पंथी नृत्य विधा

छततीसगढ़ प्रदेश की नृत्य विधा में पंथी शैली को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह नृत्योत्सव गुरू घासीदास जी के जन्मोत्सव के रूप में भी आयोजित होता है जो महिनों चलता रहता है। जैतखम्ब (सतनाम प्रतीक स्तम्भ) की छत्र छाया में नृत्य का आयोजन होता है। इस प्रकार के जैतखम्ब का विवरण वीरगाथा काल में ग्रंथो में प्राप्त होता है। सम्भवतया यह परम्परा वहीं से निकली हुई है, जो वीरों के वीरता को प्रदर्शित करने का ऐतिहासिक माध्यम है। गुरू घासीदास जी के धर्म संदेश, जीवन दर्शन, उनके कल्याणकारी कार्य आदि पर केन्द्रित गीतों के साथ नृत्य का आयोजना होता है। पुरूष तथा महिलाएँ पृथक–पृथक झुंड बनाकर नृत्य करते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नाट्य ग्रंथो एवं नृत्य विधाओं से भारतीय ऐतिहासिक घटनाक्रमों के विवरण प्राप्त होते हैं। जो भारतीय परम्परा से निकट से जुड़े हुए हैं।

सन्दर्भ

1. डॉ. विमलचन्द पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास।
2. आचार्य भरत, नाट्य शास्त्र।
3. डॉ. जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास।
4. शरीफ मोहम्मद, छत्तीसगढ़ के लोकनृत्य।